



संपादकीय...

जिस प्रकार कांग्रेसविहीन अवधारणा पेश की गई उससे भी लगने लगा कि सरकार किसी भी फैसले में विपक्ष को विश्वास में लेने में विश्वास नहीं करती। न ही किसी मंच पर जनमानस को किसी भी फैसले के प्रभावों के मद्देनजर तैयार करने की ही कोशिश सरकार की ओर दिखलाई पड़ी। कई बार लगा जैसे सरकार पारदर्शिता से काम नहीं कर रही और एकतंत्रीय व्यवस्था जैसे हालात हुए जा रहे हैं। चुनावी बॉन्ड का अधिकांश हिस्सा सत्ताधारी पार्टी को मिलने से भी एक प्रकार के अविश्वास की स्थिति नजर आने लगी।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि उनके पास बड़ी योजनाएं हैं, किसी को डरने की जल्दी नहीं है। उनके फैसले किसी को डराने या नीचा दिखाने के लिए नहीं होते। वे देश के विकास के लिए बने हैं, और 10 साल का उनका काम सिर्फ ट्रेलर है, 2047 के लिए अभी बहुत काम बाकी है। प्रधानमंत्री मोदी ने सोमवार को एक व्यूज एजेंसी को दिए विस्तृत साक्षात्कार में तमाम जिज्ञासाओं और प्रश्नों के खुलकर जवाब दिए। वेशक, चुनावी वेला उनके साक्षात्कार से काफी बातें साफ दुर्भाग्य हैं, और मंतब्यों को सही परिप्रेक्ष्य में समझने में मदद मिल सकती है। चुनावी बॉड्ड से लेकर मोदी की गारंटी कहे जाने के पीछे के मंतब्य का भी उद्घांटने खुलासा किया।

राम मान्दर का लकर हाता रहा
राजनीति में अपनी पार्टी और विपक्षी

ਮੇਦਮਾਰ ਔਰ ਸੁਵਿਧਾਓਂ ਕੀ ਕਮੀ ਦੇ ਪ੍ਰਮਾਵਿਤ ਬਾਲਿਕਾ ਰਿਕਾ

विनीत नारायण

इस बार का चुनाव लि

है, वे कहते हैं कि इससे पहले कभी किसी सरकार ने उन्हें ऐसा कुछ नहीं दिया। इसलिए वे मोदी जी के समर्थन में हैं। पर इस मुद्दे पर बुद्धिजीवियों और अर्थास्त्रियों की राय भिन्न है। वे कहते हैं कि अगर मोदी जी ने अपने वादे के अनुसार हर साल 2 करोड़ युवाओं को रोजगार दिया होता तो अब तक 20 करोड़ युवाओं को रोजगार मिल जाता। तब हर युवा अपने परिवार के कम से कम पांच सदस्यों का भरण-पोषण कर लेता। इस तरह भारत के 100 करोड़ लोग सम्मान की जिंदगी जी रहे होते जबकि आज 80 करोड़ लोग 5 किलो राशन के लिए भीख का कटोरा लेकर जी रहे हैं। दूसरी तरफ, वे लोग हैं

जो मोदी जी के अंधभक्त हैं, और हर हाल में मोदी सरकार को फिर से लाना चाहते हैं। मोदी जी के 400 पार के नारे से आत्ममुग्ध हैं। मोदी सरकार की सब नाकामियों को वे कांग्रेस शासन के मत्थे मढ़कर पिंड छुड़ा लेते हैं क्योंकि इन प्रश्नों का कोई उत्तर उनके पास नहीं है। अभी बताना असंभव है कि कांटे की टकर में ऊंट किस करवट बैठेगा। क्या विपक्षी गठबंधन की सरकार बनेगी या मोदी जी की? सरकार जिसकी भी बने, चुनौतियां दोनों के सामने बड़ी होंगी। मान लें कि भाजपा की सरकार बनती है, तो क्या हिन्दुत्व के ऐजेंडे को इसी आक्रामकता से, बिना सनातन मूल्यों की परवाह किए, बिना सांस्कृतिक परंपराओं का निर्वहन किए सब पर थोपा जाएगा, जैसा पिछले 10 वर्षों में किया गया।

हाल ही में राजस्थान के शिक्षा मंत्री ने राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित स्कूलों के विकास से संबंधित कई अहम निर्देश दिया हैं। उन्होंने स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में लागू होने वाले नवाचारों और नई तकनीकों पर आधारित गतिविधियों से राज्य के ग्रामीण विद्यालयों को जोड़ने में प्राथमिकता पर जोर दिया है ताकि नई तकनीक पर आधारित कार्यक्रमों से गांव के विद्यार्थी भी लाभावित हो सकें। दरअसल आज भी राजस्थान के कई ऐसे ग्रामीण क्षेत्र हैं जहाँ शिक्षा का प्रतिशत अन्य क्षेत्रों की तुलना में कम है। हालांकि राज्य सरकार की वेबसाइट पर उपलब्ध 2011 की जनगणना के आधार पर राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता की औसत दर 61.4 प्रतिशत दर्शाया गया है। जिसमें सबसे अधिक गंगानगर के ग्रामीण क्षेत्रों में 66.2 प्रतिशत और सबसे कम प्रतापगढ़ में 53.2 प्रतिशत बताया गया है। जिन ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का प्रतिशत कम है उसके पीछे कई कारण बताये जाते हैं जिसमें सबसे प्रमुख गांव से स्कूल की दूरी है जिससे सबसे अधिक किशोरियों की शिक्षा प्रभावित होती है।

राज्य के अजमेर जिला स्थित धुवालया नाडा गांव इसका एक उदाहरण है। जिला के रसूलपुरा पंचायत स्थित इस गांव में अनुसूचित जनजाति भील और रैगर समुदाय की बहुलता है। सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े इस गांव में आने जाने के लिए ग्रामीणों को न तो परिवहन की कोई विशेष सुविधा उपलब्ध है, न ही सार्वजनिक शौचालय और न ही सामुदायिक भवन की सुविधा है। इतना ही नहीं, गांव में कोई राजकीय विद्यालय भी नहीं है। इसके लिए बच्चों को प्रतिदिन 2 किमी दूर रसूलपुरा में स्थापित सरकारी स्कूल आना और जाना पड़ता है। परिवहन की सुविधा नहीं होने के कारण बच्चों को यह दूरी प्रतिदिन पैदल ही तय करनी पड़ती है। इसका सबसे अधिक नुकसान छोटे बच्चों के साथ साथ किशोरियों को होता है। जो अक्सर माहवारी के दिनों में पैदल स्कूल जाने और आने की बजाय घर में रहने को मजबूर हो जाती हैं। वहीं कई अभिभावक सुरक्षा के दृष्टिकोण से भी लड़कियों को इतनी दूर स्कूल

A group of people, primarily women, are gathered around a table in a library or study room, working on multiple computer monitors. In the foreground, a woman with dark hair and a blue shirt is focused on her screen. Behind her, another woman in a blue top points at one of the screens. The room has bookshelves filled with books in the background.

मेजने की जगह उनकी पढ़ाई छुड़वाने को नरजीह देते हैं। इस संबंध में कक्षा 9वीं की छात्रा जाह्वी बताती है कि गांव के बच्चे और केशरियां प्रतिदिन पैदल स्कूल जाते हैं लेकिन वहां सुविधाएं नामात्र की हैं। क्लास रुम तो बने हुए हैं लेकिन विद्यार्थियों के लिए न तो शौचालय की सुविधा उपलब्ध है और न ही पीने के साफ पानी की व्यवस्था है। जो पानी उपलब्ध है वह इतना खारा है कि बच्चे उसे पीना नहीं भावहृत हैं, इसके बावजूद स्कूल की ओर से उसी पानी में मिल्क पाउडर मिला कर बच्चों को पीने के लिए दिया जाता है, जिससे कई बार बच्चों की तबीयत बिंगड़ जाती है। उसी कक्षा की सोनू बताती है कि पहले स्कूल में छात्र-छात्राओं के लिए शौचालय की कोई व्यवस्था नहीं थी। पिछले वर्ष स्कूल में शैचालय का निर्माण कराया गया, लेकिन स्कूल प्रशासन की ओर से यह कह कर उसमें ताला लगा दिया गया कि बच्चे इसे गंदा कर देते हैं। ऐसे में छात्राएं माहावारी के समय स्कूल आने की जगह घर पर रुकना ही उचित समझती हैं क्योंकि जब शैचालय की व्यवस्था नहीं है तो वह जरूरत के समय पैड कहां चेंज करेगी? कई बार छात्राओं ने इस समस्या से स्कूल की शिक्षिकाओं को अवगत भी कराया, लेकिन उनकी ओर से भी कोई पहल नहीं की गई। सोनू बताती है कि गांव से कम से कम 20 छात्राएं नियमित रूप से स्कूल जाती हैं। लेकिन

A woman with dark hair tied back, wearing a blue short-sleeved shirt, is looking down at a computer screen. She appears to be in a classroom or office setting. Another person's arm and shoulder are visible behind her, also looking at the screen. The background shows other people and what looks like a chalkboard or wall.

कर चुके हैं। जिसकी बाद अभिभावक स्तर पर इस मुद्दे को उठाया गया, जिससे दोनों इलाकों में तनाव भी हो गया था। इससे उल्टा लड़कियों की शिक्षा पर ही असर पड़ा, अभिभावक हमारी सुरक्षा के प्रति बहुत चिंतित रहते हैं। यही कारण है कि अब इस गाँव की लड़कियों को अकेले स्कूल जाने आने नहीं दिया जाता है।

राज्य सरकार की वेबसाइट पर उपलब्ध 2011 की जनगणना के अनुसार राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की औसत साक्षरता दर मात्र 45.8 प्रतिशत है। इसमें अजमेर जिला के ग्रामीण क्षेत्रों में औसत से भी कम मात्र 41.3 प्रतिशत है। हालांकि 2001 की जनगणना के 32.7 प्रतिशत की तुलना में यह काफ़ी अच्छा है, लेकिन इसे संतोषजनक नहीं कहा जा सकता है। इसके लिए ज़रूरी है कि स्कूलों में किशोरियों के लिए बुनियादी सुविधाओं को अधिक से अधिक बढ़ाया जाए। साथ ही स्कूल का ऐसा वातावरण तैयार किया जाए जहां वह आसानी से शिक्षा प्राप्त कर सकें। दरअसल शिक्षा हमें जातिगत भेदभाव से दूर करती है, लेकिन सच तो यह है कि हाशिए पर खड़े समुदाय और अति पिछड़े समाज के बच्चों को आज भी इसे पाने के लिए संघर्ष करनी पड़ रही है। उन्हें कई प्रकार के भेदभावों से गुजरना पड़ रहा है। उनके हौसले को बढ़ाने की जगह मनोबल को तोड़ने का काम किया जा रहा है।

जबकि यह शिक्षाकों और स्कूल प्रबंधन का कर्तव्य बनता है कि वह स्कूल का ऐसा वातावरण बनाएं जहां न केवल भेदभाव का कोई स्थान न हो बल्कि बच्चे शिक्षकों के साथ बिना भय के अपने मन की बात भी साझा कर सकें। माहवारी किशोरियों की ज़िंदगी से जुड़ी एक प्राकृतिक प्रक्रिया है, लेकिन जब स्कूल में इसी से संबंधित प्रबंध नहीं होंगे, उन्हें शौचालय की सुविधा नहीं मिलेगी तो हो सकता है कि भविष्य में किशोरियों के ड्राप आउट की संख्या बढ़ जाए। आज जब हम स्वतंत्र हैं, सभी को शिक्षा प्राप्त करने का पूरा अधिकार है इसके बावजूद कई ऐसे गांव, बस्ती और कस्बे हैं जहां भेदभाव तो कहीं बुनियादी सुविधाओं की कमी के कारण इस अधिकार का हनन हो रहा है। जिसका सबसे पहले नकारात्मक प्रभाव किशोरियों की शिक्षा पर पड़ता है।

भगवान महावीर हैं सार्वभौम धर्म के प्रणेता

ललित गर्ग

सदियों पहले महावीर जनमे। वे जन्म से महावीर नहीं थे। उन्होंने जीवन भर अनगिनत संघर्षों को झेला, कष्टों को सहा, दुख में से सुख खोजा और गहन तप एवं साधना के बल पर सत्य तक पहुंचे, इसलिये वे हमारे लिए आदर्शों की ऊँची मीनार बन गये। उन्होंने समझ दी कि महानता कभी भौतिक पदार्थों, सुख-सुविधाओं, संकीर्ण सोच एवं स्वार्थों मनोवृत्ति से नहीं प्राप्त की जा सकती उसके लिए सच्चाई को बटोरना होता है, नैतिकता के पथ पर चलना होता है और अहिंसा की जीवन शैली अपनानी होती है। महावीर का संपूर्ण जीवन स्व और पर के अभ्युदय की जीवत प्रेरणा है। लाखों-लाखों लोगों को उन्होंने अपने आलोक से आलोकित किया है। वे सार्वभौम धर्म के प्रणेता थे, उनके मन में संपूर्ण प्राणिमात्र के प्रति सहअस्तित्व की भावना थी। इस वर्ष भगवान महावीर की 2550 वां निर्वाण महोत्सव मनाया जा रहा है, उनकी जन्म जयन्ती एवं निर्वाण महोत्सव न केवल जैन धर्म के अनुयायियों के लिये बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिये उत्तम जीवन का आधार है, निर्वाण महोत्सव का भव्य आयोजन भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा आयोजित किया जा रहा है, जिसका उद्घाटन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी दिल्ली के प्रगति मैदान में भारत मंडपम् सभागार में 21 अप्रैल, 2024 को चारों जैन सम्प्रदायों के आचार्यों, मुनिराजों एवं ऋद्धालुओं की उपस्थिति में करेंगे। भगवान महावीर की मूल शिक्षा है-



अहिंसा'। सबसे पहले 'अहिंसा परमो धर्मः' का प्रयोग हिन्दुओं का ही नहीं बल्कि समस्त मानव जाति के पावन ग्रंथ 'महाभारत' के अनुशासन पर्व में किया गया था। लेकिन इसको अंतर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि दिलवायी भगवान महावीर ने। भगवान महावीर ने अपनी बाणी से और अपने स्वयं के जीवन से इसे वह प्रतिष्ठा दिलाई कि अहिंसा के साथ भगवान महावीर का नाम ऐसा जुड़ गया कि दोनों को अलग कर ही नहीं सकते। अहिंसा का सीधा-साधा अर्थ करें तो वह होगा कि व्यावहारिक जीवन में हम किसी को कष्ट नहीं पहुंचाएं, किसी प्राणी को अपने स्वार्थ के लिए दुःख न दें। आत्मानः प्रतिकूलान् परेषाम् न समाचरेत्" इस भावना के अनुसार दूसरे व्यक्तियों से ऐसा व्यवहार करें जैसा कि हम उनसे अपने लिए अपेक्षा करते हैं। इतना ही नहीं सभी जीव-जन्मुओं के प्रति अर्थात् पूरे प्राणी मात्र के प्रति अहिंसा की भावना रखकर किसी प्राणी की अपने स्वार्थ व जीभ के स्वाद आदि के लिए हत्या न तो करें और न ही करवाएं और हत्या से उत्पन्न वस्तुओं का भी उपभोग नहीं करें।

एक बार महावीर और उनका शिष्य गोशालक एक घने जंगल में विचरण कर रहे थे। जैसे ही दोनों एक पौधे के पास से गुजर रहे थे। शिष्य से दुश्मन बन चुके गोशालक ने महावीर से कहा, यह पौधा देखिए, क्या सोचते हैं आप, इसमें फूल लागें या नहीं लागें? महावीर आंख बंद करके उस पौधे के पास खड़े हो गए, और कुछ देर बाद आंखें खोलते हुए उन्होंने कहा, फूल लागें। गोशालक ने महावीर का कहा सत्य न हो, इसलिये तक्काल

A traditional Indian painting of the Buddha. He is seated in a meditative pose (Padmasana) on a large, dark rock. He wears simple orange robes. His right hand is in a mudra (gesture) near his chest, and his left hand rests on his knee. A bright, glowing light surrounds him, particularly from behind, suggesting divine radiance or enlightenment. The background is a soft-focus landscape with trees and a body of water.

अहिंसक

जाह्नवी का नाम परिचय करने का उत्तम विधायक नहीं बना। उन्होंने अपने हाने का अहसास जगाकर अहं को खड़ा नहीं होने दिया। इसीलिये उनकी शिक्षाओं एवं उपदेशों का हमारे जीवन और विशेषकर व्यावहारिक जीवन में विशेष महत्व है। हम अपने जीवन को उनकी शिक्षाओं के अनुरूप ढाल सकें, यह अधिक आवश्यक है लेकिन इस विषय पर प्रायः सत्राटा देखने को मिलता है। हम महावीर को केवल पूजते हैं, जीवन में धारण नहीं करते हैं। हम केवल कर्मकाण्ड और पूजा विधि में ही लगे रहते हैं। महावीर का यह सदेश जन-जन के लिये सीख बने—‘पुरुष! तू स्वयं अपना भाग्यविधाता है।’ औरों के सहारे मुकाम तक पहुंच भी गए तो क्या? इस तरह की मर्जिलें स्थायी नहीं होती और न इस तरह का समाधान कारगर होता है। भगवान् महावीर कितना सरल किन्तु सटीक कहा है— सुख सबको प्रिय है, दुःख अप्रिय। सभी जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। हम जैसा व्यवहार स्वयं के प्रति चाहते हैं, वैसा ही व्यवहार दूसरों के प्रति भी करें। यही मानवता है और मानवता का आधार भी। मानवता बचाने में है, मारने में नहीं। किसी भी मानव, पशु-पक्षी या प्राणी को मारना, काटना या प्रताङ्गित करना स्पष्टतः अमानवीय है, कर्तृतापूर्ण है। हिंसा-हत्या और खून-खच्चर का मानवीय मूल्यों से कभी कोई सरोकार नहीं हो सकता। मूल्यों का सम्बन्ध तो ‘जियो और जीने दो’ जैसे सरल श्रेष्ठ उद्घोष से है।

एक आर महत्वपूर्ण प्रश्न है, क्या सुख का बदलना जानता हो, बाल्क सपूर्ण मानवता के स्थायी बनाया जा सकता है? क्या दुःख को उज्ज्वल भविष्य की मनोकामना रखता हो।

हेल्दी लाइफ का मंत्र है योगा

हेल्दी लाइफ गाहते हैं, तो योगा और मेडिटेशन को ऐयुलर फॉलो करें। एक्सपर्ट्स के मुताबिक, एक महीने तक रोजाना 20 मिनट मेडिटेशन करना ही आपकी सेहत को बहुत हृद तक सुधार सकता है। वैसे, इन्हें कम समय में करने की टेक्नीक भी हैं।

आज हर तरफ तनाव बढ़ रहा है। ऐसे में सुकून पाने के लिए लोगों का झुकाव योगा व मेडिटेशन की तरफ बढ़ रहा है। दरअसल, अब लोग शारीरिक व मानसिक समस्या का हल योग में तलाशने लगे हैं। अगर आप भी इन्हें में से हैं, तो जल्दी और आसानी से होने वाले शिफ्ट योग।

कुछ लोगों का कहना है कि रोजमर्की की इस भागभाग जिंदगी में जहां साथ लेने की फूरसत नहीं है, वहां योग व मेडिटेशन कैसे किया जाए। ऐसी शिकायत करने वालों के लिए रिफ़ेश योगा बेहद फायदेमंद साबित होगा। बता दें कि रिफ़ेश योगा प्राणायाम का पार्ट है, लेकिन आप इसे करें, तो धीरे-धीरे सुकून फॉल करें। अगर आप थक-थक रहते हैं, तो कुछ ही दिनों में हेल्दी फॉल करने लगें। फ़ेश होने का यह सबसे आसान तरीका है और खास कात यह है कि बस, ट्रेन और प्लेन, यह कहीं भी किया जा सकता है।

► अंख, जिंदगी, कमर, गर्दन और हाथ पैरों की कलाइयों को दांप-बांप और ऊपर-नीचे करते हुए गोल-गोल छुपाएं।

► हाथों की मुड़ी को खोलें और बंद करें। इसी तरह पैरों की उंगलियों को खोलें और बंद करें।

► पूरा मुंह खोलकर बंद करें। कानों को मरोड़ें।

► खुलकर अंगड़ाई लें।

► अगर तनाव में हैं, तो पेट की हवा पूरी तरह बाहर निकाल दें और नए सिरे से फ़ेश हवा भरें। ऐसा पांच से छह बार करें।

► हंसने का मौका हो, तो बिलियिलाकर हंसें।

योग टॉनिक

आठ घंटा सोने के बाद भी अगर आप टॉनिक फॉल नहीं रह पाते हैं या पूरी तरह रिलैक्स्ड फॉल नहीं करते, तो योग टॉनिक अपनाएं। योग टॉनिक में आप सबसे पहले योग संगीत को अपनी लाइफ का हिस्सा बनाएं।

► योग संगीत से मतलब ऐसा संगीत, जो मन को सुकून देता है।

► योग संगीत में पूरी तरह रम जाएं। तकरीबन 10 मिनट का योग संगीत आपको रिफ़ेश कर देगा।

► संगीत को धीरी आवाज में बजाएं।

हास्य योगा

एक्सपर्ट्स के मुताबिक, खुश और प्रसन्न रहना लंबी उम्र और हेल्थ का राज है। इसलिए सुकून, दोपहर और शाम तीनों समय खूब जोर से हों।

► जितना जोर से हो सके, हमें।

► हंसने को अंदर से लाएं। ऐसा नहीं होना चाहिए कि आपके सिर्फ होंठ खुलें।

► एक बार में 1 से 2 मिनट तक हंसें।

► खुलकर हंसने से आपका ब्लड सर्कुलेशन ठीक हो जाता है, जिससे आप हेल्दी रहते हैं।

► ओम का उच्चारण

आप ओम का उच्चारण भी धीरी आवाज में कर सकते हैं। ऐसे सांस रोककर जितनी देर तक कर सकते हैं, करें।

► यह मन को अंदर तक शांत कर देता है।



► ब्रेन सेल्स को आराम मिलता है।

► इसके उच्चारण के दौरान पेट को जितनी देर तक हो सके, अंदर खींचें।

ट्रांसडर्मल मेडिटेशन

अगर आपका काम तनाव से भरा है और साथ आपको कई बार चीजें याद भी नहीं रहती, तो ट्रांसडर्मल मेडिटेशन करें। मानसिक तनाव को कम करने का एक यह एक बेहतर विकल्प हो सकता है।

► योग संगीत में पूरी तरह रम जाएं। तकरीबन 10 मिनट का योग संगीत आपको रिफ़ेश कर देगा।

► संगीत को धीरी आवाज में बजाएं।

एक्सपर्ट्स के मुताबिक, खुश और प्रसन्न रहना लंबी उम्र और हेल्थ का राज है। इसलिए सुकून, दोपहर और शाम तीनों समय खूब जोर से हों।

► जितना जोर से हो सके, हमें।

► हंसने को अंदर से लाएं। ऐसा नहीं होना चाहिए कि आपके सिर्फ होंठ खुलें।

► एक बार में 1 से 2 मिनट तक हंसें।

► खुलकर हंसने से आपका ब्लड सर्कुलेशन ठीक हो जाता है, जिससे आप हेल्दी रहते हैं।

► एक साथ बहुत सारी चीजों में शामिल न हों। ► खुश रहने के लिए काम का एंजॉय करना भी जरूरी है।

► दिमारी सुकून के लिए किसी से बहुत ज्यादा उम्मीदें न लगाएं।

► एक साथ बहुत सारी चीजों में शामिल न हों। ► खुश रहने के लिए काम का एंजॉय करना भी जरूरी है।

► दिमारी सुकून के लिए किसी से बहुत ज्यादा उम्मीदें न लगाएं।

► एक साथ बहुत सारी चीजों में शामिल न हों। ► खुश रहने के लिए काम का एंजॉय करना भी जरूरी है।

► दिमारी सुकून के लिए किसी से बहुत ज्यादा उम्मीदें न लगाएं।

► एक साथ बहुत सारी चीजों में शामिल न हों। ► खुश रहने के लिए काम का एंजॉय करना भी जरूरी है।

► एक साथ बहुत सारी चीजों में शामिल न हों। ► खुश रहने के लिए काम का एंजॉय करना भी जरूरी है।

► एक साथ बहुत सारी चीजों में शामिल न हों। ► खुश रहने के लिए काम का एंजॉय करना भी जरूरी है।

► एक साथ बहुत सारी चीजों में शामिल न हों। ► खुश रहने के लिए काम का एंजॉय करना भी जरूरी है।

► एक साथ बहुत सारी चीजों में शामिल न हों। ► खुश रहने के लिए काम का एंजॉय करना भी जरूरी है।

► एक साथ बहुत सारी चीजों में शामिल न हों। ► खुश रहने के लिए काम का एंजॉय करना भी जरूरी है।

► एक साथ बहुत सारी चीजों में शामिल न हों। ► खुश रहने के लिए काम का एंजॉय करना भी जरूरी है।

► एक साथ बहुत सारी चीजों में शामिल न हों। ► खुश रहने के लिए काम का एंजॉय करना भी जरूरी है।

► एक साथ बहुत सारी चीजों में शामिल न हों। ► खुश रहने के लिए काम का एंजॉय करना भी जरूरी है।

► एक साथ बहुत सारी चीजों में शामिल न हों। ► खुश रहने के लिए काम का एंजॉय करना भी जरूरी है।

► एक साथ बहुत सारी चीजों में शामिल न हों। ► खुश रहने के लिए काम का एंजॉय करना भी जरूरी है।

► एक साथ बहुत सारी चीजों में शामिल न हों। ► खुश रहने के लिए काम का एंजॉय करना भी जरूरी है।

► एक साथ बहुत सारी चीजों में शामिल न हों। ► खुश रहने के लिए काम का एंजॉय करना भी जरूरी है।

► एक साथ बहुत सारी चीजों में शामिल न हों। ► खुश रहने के लिए काम का एंजॉय करना भी जरूरी है।

► एक साथ बहुत सारी चीजों में शामिल न हों। ► खुश रहने के लिए काम का एंजॉय करना भी जरूरी है।

► एक साथ बहुत सारी चीजों में शामिल न हों। ► खुश रहने के लिए काम का एंजॉय करना भी जरूरी है।

► एक साथ बहुत सारी चीजों में शामिल न हों। ► खुश रहने के लिए काम का एंजॉय करना भी जरूरी है।

► एक साथ बहुत सारी चीजों में शामिल न हों। ► खुश रहने के लिए काम का एंजॉय करना भी जरूरी है।

► एक साथ बहुत सारी चीजों में शामिल न हों। ► खुश रहने के लिए काम का एंजॉय करना भी जरूरी है।

► एक साथ बहुत सारी चीजों में शामिल न हों। ► खुश रहने के लिए काम का एंजॉय करना भी जरूरी है।

► एक साथ बहुत सारी चीजों में शामिल न हों। ► खुश रहने के लिए काम का एंजॉय करना भी जरूरी है।

► एक साथ बहुत सारी चीजों में शामिल न हों। ► खुश रहने के लिए काम का एंजॉय करना भी जरूरी है।

► एक साथ बहुत सारी चीजों में शामिल न हों। ► खुश रहने के लिए काम का एंजॉय करना भी जरूरी है।

► एक साथ बहुत सारी चीजों में शामिल न हों। ► खुश रहने के लिए काम का एंजॉय करना भी जरूरी है।

► एक साथ बहुत सारी चीजों में शामिल न हों। ► खुश रहने के लिए काम का एंजॉय करना भी जरूरी है।

► एक साथ बहुत सारी चीजों में शामिल न हों। ► खुश रह

